प्रथम अध्याय

रांगेय राघव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व —

(अ) व्यक्तित्व

१) प्रस्तावना

२) वंश परम्परा और परिवार

१) वंश परम्परा

२) जन्मतिथि, स्थान और नाम

३) पारिवारिक संस्कार

१) माता - पिता

२) भाई

३) आयंगार परिवार से रिस्ता

४) शिक्षा और कार्य

५) व्यक्तित्व के पहलू

६) साहित्य लेखन योजना

(ब) कृतित्व -

१) प्रस्तावना

२) प्रेरक तत्व

३) प्रथम रचना

४) रचनाओं की सूची

५) प्रस्तुत लघु प्रबन्ध से सम्बन्धित रचनाएँ

निष्कर्ष ।

प्रथम अध्याय

" रांगेय राघव का व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

(अ) रांगेय राघव का व्यक्तित्व --

१) प्रस्तावना --

रांगेय राघव प्रगतिशील विचारों को चित्रित करनेवाले साहित्यकार माने जाते है। सभी प्रकार की साहित्यिक विधाओं को कुशलता से अपनानेवाले रांगेय राघव जी के साहित्य में शोषितों, पीडितों के प्रति अपनत्व की भावना दिखाई देती है। उन्होंने सामन्तवादी शोषण नीति के विरुध्द शोषितों को संघर्ष की प्रेरणा दी है। समाजवादी समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्न करनेवाले राघवजी उपेक्षित, दलितों के जीवन को कथासूत्र का आधार बनाकर मानव-धर्म की स्थापना के लिए साहित्य सृजन किया है।

२) वंश परम्परा और परिवार --

" रांगेय राघव का परिवार कुल से दाक्षिणात्य लेकिन ढाई शतक से पूर्वज वैर (भरतपुर-राजस्थान) के निवासी बने। " [१]

(क) वंश परम्परा --

" यहाँ (वैर) आकर उन्होंने अपने आराध्य देवता जिन्हें वे दक्षिण भारत से आपने साथ ले आए थे, मंदिर बनाकर " सीतारामजी " की मूर्ति की प्रतिष्ठा की। " [२] उस मंदिर की देखभाल रांगेय राघव के बडे भाई श्री टी.एन.के. आचार्य

---

१ सम्पा.अशोक शास्त्री - डॉ.रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) " डॉ.रांगेय राघव " इस शीर्षक से प्राप्त।

२ डॉ.कपलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेयराघव: जीवनी एवं व्यक्तित्व - पृ.१८।

आज भी करते हैं। याने कि रांगेय राघव का परिवार उस मंदिर का मालिक है।

" रांगेय राघव के पूर्वजों का क्रम निम्नानुसार है।

श्री निवासाचार्य

श्री वीरराघवाचार्य

श्री वरदाचार्य

श्री नारायणाचार्य

श्री विजयराघवाचार्य

श्री रंगाचार्य ।

१) श्री टी.एन.एल.आचार्य २) श्री टी.एन.के आचार्य और
३) श्री टी.एन.व्ही.आचार्य।"[१]

" अत: सातवीं पीढी में रांगेय राघव हुए हैं।"[२] इनके पूर्वज भी लेखन कार्य करते थे। पूर्वजों की लिखित अनेक तामिल और संस्कृत ग्रंथों की पांडुलिपियाँ आज भी " वैर " में उनके घर में सुरक्षित है।

(ख) जन्मतिथि, स्थान और नाम -

" १७ जनवरी १९२३ में प्रात: ४ बजे आगरा के बाग मुजफ्फरखाँ मोहल्ले में श्री बागेश्वरनाथ जी के मंदिर से बिल्कुल सटे हुए पीपल वृक्ष की छाया से आच्छादित घर में रांगेय राघव का जन्म हुआ।"[3] ठीक ही आगरा के मोहल्ला बाग मुजफ्फरखाँ से गुजरनेवाले सड़क के मार्ग पर श्री बागेश्वरनाथ जी के मंदिर की बगल में आगरा, नगर परिषद की ओर से एक फलक लगा हुआ है। उस पर " डॉ.रांगेय राघव मार्ग " लिखा है।" इस फलक को उनका स्मृतिचिन्ह मान सकते हैं। इस समय वहाँ एक दुकान

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे, - कथाकार रांगेय राघव : जीवनी एवं व्यक्तित्व" - पृ.१८।

२ वही, पृ.१८।

३ वही, पृ.१८।

है, उसका नाम है " आसराम कलदेवदास एण्ड सन्स " । इस सम्बन्ध में रांगेय राघव के परिवार से सम्बन्धित श्यामा कहारिन ने जानकारी दी कि, इसी घर में रांगेय राघव का जन्म हुआ था । "[१] बाद में उन्होंने घर बदल दिया । " आज जहाँ तिलक कमर्शियल इंस्टीटयूट " है, वहीं पर उनका कुछ वर्षों तक कार्यक्षेत्र रहा । " [२]

(ग) नाम :-

अध्ययन के अनुसार " जन्म कुंडली के आधार पर रांगेय राघव जी के दो नाम बताए जाते है । १) तिरूमल निम्बाकम् राममूर्ति आचार्य २) तिरूमल निम्बाकम् वीरराघव आचार्य । "[3] किन्तु " रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ , पहला भाग - " डॉ. रांगेय राघव " इस शीर्षक में रांगेय राघव का नाम " तिरूमले नम्बाकम वीरराघव आचार्य " है[४]। " रांगेय राघव का मुलनाम श्री टी.एन.व्ही.आचार्य । परन्तु उनके घर और मित्रों में प्यार का नाम पप्पू था । " रांगेय राघव " उनका साहित्यिक नाम है । उनके पिता का नाम था - रंगाचार्य, जिससे बना " रांगेय " अर्थात रंगाचार्य का पुत्र और रांगेय राघव ने अपना नाम " वीरराघव आचार्य " का संक्षेप किया - " राघव " । रांगेय और राघव दोनों के मिलने से बना हुआ नाम है - " रांगेय राघव " । " कुछ लोग उन्हें आचार्य एवं स्वामी भी कहते थे । लेकिन इन नामों का अधिक प्रचलन न रहा । वैर के लोग उन्हें स्वामीजी, छोटे महाराज या भैयाजी आदि आदरवाचक संबोधन से संबोधित करते थे । साहित्यिक जीवन में पदार्पण

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे- " कथाकार रांगेय राघव :जीवनी एवं व्यक्तित्व - पृ.१८-१९ डॉ.कमलाकर गंगावणे जी को श्यामा कहारिन से प्राप्त ।

२ वही -, पृ.१९ - डॉ.कमलाकर गंगावणे जी को डॉ.घनश्याम अस्थाना से प्राप्त ।

3 डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.१९ ।

४ सम्पा.अशोक शास्त्री - डॉ.रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (प्रथम भाग) " डॉ.रांगेय राघव " इस शीर्षक से प्राप्त ।

करने के बाद उन्होंने कवि मित्र भारतभूषण अग्रवाल के सुझाव पर ध्यान देकर अपना संक्षेप नाम रांगेय राघव रखा।" [१]

३) पारिवारिक संस्कार --

रांगेय राघव का परिवार सुसम्पन्न तथा सुसंस्कृत था। रांगेय राघव के पिता श्री रंगाचार्य" वैर" के जागीरदार और सीतारामजी के मंदिर के मालिक थे। रांगेय राघव पर इन संस्कारों का प्रभाव पडा है। परिवार के महत्वपूर्ण सदस्यों के क्रम से इन संस्कारों का महत्वपूर्ण स्थान है।

(क) पिता --

" श्री रंगाचार्य संस्कृत के विद्वान थे। वे एक श्लोक का अर्थ तीन दिन तक भिन्न-भिन्न रूपों में समझाते थे। वे फारसी के ज्ञाता थे और फारसी में शायरी भी करते थे। संस्कृत के विद्वान होने के कारण वे काव्यशास्त्र का खास ज्ञान रखते थे। वे रांगेय राघव को पिंगलशास्त्र पढने का आग्रह करते थे।"[२] यहाँ रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके पिता के संस्कार दिखाई देते है।

(ख) माता --

" रांगेय राघव जी की माताजी का नाम कनकवल्ली था। वह सीधी, सरल और सुसंस्कृत महिला थी। वह साहित्य और ब्रजभाषामें विशेष रूचि रखती थी। वह तमिल, कन्नड की भी ज्ञानी थी।"[३] रांगेय राघव के व्यक्तित्व के निर्माण में उनके माता के संस्कार पाए जाते है।

---

१ डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.१९।
२ वही पृ.२०।
३ वही पृ.२०।

(ग) भाई --

रांगेय राघव सबसे छोटे थे। रांगेय राघव के दो बड़े भाई थे। पहले श्री टी.एन.एल.आचार्य और दूसरे श्री टी.एन.के.आचार्य। उन्हें "इंदिरा" नाम की एक छोटी बहन थी। परन्तु वह डेढ साल के शैशव काल में ही चल बसी। "परिवार में सबसे छोटे होने के कारण परिवार के सभी सदस्यों का स्नेह उन्हें प्राप्त हुआ।" [१]

(३) श्रवणकुमार --

श्रवणकुमार रांगेय राघव के परिवार में सेवक था। श्रवणकुमार ने १३ वर्षों तक उनके परिवार की सेवा की। रांगेय राघव श्रवणकुमार के साथ सेवक की अपेक्षा भाई जैसा व्यवहार करते थे। वे श्रवणकुमार को "सरनम" नाम से संबोधित करते थे। सरनम रांगेय राघव की मौत के समय भी बम्बई में उनके पास था। "श्रवणकुमार की रांगेय राघव के प्रति अस्मिता श्रध्दा रही है। इसलिए उसने वैर में सन १९७४ में "डॉ.रांगेय राघव अध्ययन केन्द्र" की स्थापना की और आज भी वह केन्द्र कार्य कर रहा है।" [२]

(च) आयंगार परिवार से 'रिस्ता'-

रांगेय राघव हिन्दी भाषा एवं साहित्य की सेवाकरने हेतु विवाह के इच्छुक नहीं थे। फिर भी सामाजिक एवं पारिवारिक दबाव उनपर पड रहा था। वे ३३ वर्षों तक अविवाहित रहे।

एक बार रांगेय राघव बम्बई में श्रीकृष्ण स्वामी आयंगार के परिवार में लड़की देखने के हेतु गए थे। वहाँ इन्होंने श्रीमती सुलोचना जी की बडी बहन श्रीमती

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.२०।

२ वही पृ.२१।

शकुंतला जी को देखा। किन्तु स्वयं को अयोग्य समझकर उन्होंने अपने बडे भाई श्री टी. एन. एल.आचार्य का प्रस्ताव रखा । श्री टी. एन. एल.आचार्य और शकुंतला जी आयंगार का सन १९५४ में विवाह सम्पन्न हुआ । सन १९५५ के दिसम्बर महिने में प्रथम बार श्रीमती सुलोचना जी अपनी माँ के साथ, बडी बहन श्रीमती शकुंतला जी से मिलने हेतु वेर आयी थी । वहीं रांगेय राघव जी ने श्रीमती सुलोचना जी को समीप से देखा - परखा और समझा । वहाँ परस्पर वार्तालाप के भी कई प्रसंग आए । जब उन्होंने श्रीमती सुलोचना जी के सम्मुख विवाह का प्रस्ताव रखा तब श्रीमती सुलोचना जी ने मौन स्वीकृति दी । अन्तत: दोनों की पारस्परिक निष्ठा सफल हुई और १ मई १९५६ को माटुंगा, बम्बई में विवाह सम्पन्न हुआ ।[१] बाद में आयंगार परिवार जुनागढ छोडकर बोर्डी (महाराष्ट्र राज्य) में आकर बस गया । सन १९५० में आपने बडे भाई श्री ए.के. एस.आयंगार के साथ श्रीमतीसुलोचना बम्बई आयी ।[२] उनकी हाईस्कूल की शिक्षा कुर्ला के होली क्रॉस स्कूल में हुई । उन्होंने सन १९५६में हाईस्कूल की परीक्षा पास की और इसी वर्ष उनका विवाह भी हुआ । मराठी के मानवतावादी लेखक श्री साने गुरुजी से शिक्षित होने का उन्हें सुयोग मिला है । साहित्य तथा कला की उन्हें अच्छी परख थी । उनकी इच्छा थी कि, ऐसे व्यक्ति से विवाह हो जो वास्तव में महान कलाकार हो । उनका सपना साकार हुआ ।[३]

श्रीमती सुलोचना जी को शिक्षा विवाहपूर्व हाईस्कूल तक हुई थी । विवाह के बाद रांगेय राघव की प्रेरणा से श्रीमती सुलोचना जी ने रामनारायण रुईया कॉलेज, माटुंगा, बम्बई में बी. ए. तक की शिक्षा पाई । रांगेय राघव की मृत्यु

---

१ डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ. २१ ।

२ वही पृ. २२ ।

३ वही पृ. २२ ।

के पश्चात उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर में समाजशास्त्र में एम. ए. किया।[1] "आज जो पद और प्रतिष्ठा श्रीमती सुलोचना जो ने पाई है, उसका वास्तविक प्रेरणा-श्रोत रांगेय राघव ही थे।"[2]

४) शिक्षा और कार्य --

रांगेय राघव का प्रधान कार्यक्षेत्र, लेखन तथा अध्ययन है। रांगेय राघव ने एक सच्चे ज्ञानसाधक के रूपमें शिक्षा प्राप्त की है। उन्होंने विश्वविद्यालय की उच्चतम उपाधि पी-एच.डी.भी प्राप्त की। उनकी शिक्षा तथा कार्य का सामान्य परिचय नीचे दिया जा रहा है --

(क) शिक्षा --

"रांगेय राघव की शिक्षा आगरा में हुई।"[3] प्रारंभ में हाईस्कूल तक की शिक्षा सेन्टजान्स स्कूल और विक्टोरिया स्कूल में हुई। "हाईस्कूल की परीक्षा उतीर्ण होने के बाद उन्होंने सेंट जान्स कॉलेज में एम. ए. तक का अध्ययन किया।"[4] "वे १९४४ में एम. ए. (हिन्दी) हुए।"[5] रांगेय राघव ने पी-एच.डी.उपाधि आगरा विश्वविद्यालय में प्राप्त की। इनके शोध-प्रबन्ध का विषय "भारतीय मध्ययुग के सन्धिकाल का अध्ययन" (श्री गोरक्षनाथ और उनका युग) है। यह कार्य

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.२२।

२ वही पृ.२२।

३ सम्पा.अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) "डॉ.रांगेय राघव" शीर्षक से उध्दृत।

४. डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.२४।

५ सम्पा.अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) से उधृत।

उन्होंने श्री डॉ. हरिहरनाथ टण्डन के निर्देशन में सन १९४८ में पूर्ण किया। सन १९४८ में उन्हें उपाधि भी प्राप्त हुई।

(ख) अन्य विषायों का अध्ययन --

रांगेय राघवजीने नियमित पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ अन्य अनेक विषायों का परिश्रम से अध्ययन किया है। विशेषा जानकारी के लिए कुछ विषायों का परिचय नीचे दिया जा रहा है।

" रांगेय राघव जी को साहित्य के अतिरिक्त संस्कृत, चित्रकला, संगीत और इतिहास - पुरातत्व में विशेषा रुचि है। साहित्य की प्राय: सभी विधाओं में वे सिध्दहस्त है।"[१]

(ग) कार्य --

रांगेय राघवजी ने" किशोरावस्था में लेखनारंभ " किया था। १९-२० वर्षा की अवस्था में अकालग्रस्त बंगाल की यात्रा की। लौटकर हिन्दी के प्रारंभिक पर अविस्मरणीय रिपोर्ताजी" तूफानों के बीच " का सृजन किया।" २३-२४ वर्षा की आयु से ही वे हिन्दी जगत में अभूतपूर्व चर्चा के विषाय बने। मई, १९४७ में प्रथम कहानी संग्रह " साम्राज्य का वैभव" का प्रकाशन किया।" मेरी प्रिय कहानियाँ ", " चमन", सहित कुल ग्यारह कहानी संग्रह प्रकाशित हुएँ। अनेक कहानियाँ भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुदित हो गई।"[२]

" रांगेय राघवजी का सम्बन्ध आगरा से घनिष्ट रहने के कारण यही से

---

१. सम्पा. अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) से उधृत।

२ वही

अपनी रचनाओं के लिए सामग्री का संकलनकिया था। आप शोध-प्रबंध पूर्ण करने के हेतु, सामग्री इकट्ठी करने के लिए वाराणसी गए। " शान्तिनिकेतन के स्वस्थ वातावरण में उन्होंने अपना शोधकार्य पूरा किया। सन १९४२ में उन्होंने आगरा के स्थानीय हिन्दी दैनिक " सन्देश" में सम्पादन कार्य किया[१]। " सन १९४६ में उन्होंने द्वैमासिक " निर्माण" का सम्पादन कार्य संभाला। " सन १९४८ में आगरा विश्वविद्यालय से उन्हें पीएच.डी.की उपाधि मिली[२]। " " सन १९५२ में रांगेय राघव अपने मित्र प्रोडयुसर श्री सत्यपाल शर्मा के साथ सिने जगत में कार्य करने हेतु बम्बई गए। वहाँ उन्होंने कुछ फिल्मों की कथा लिखी[३]। " " जिनमें से एक " लंकादहन " पर फिल्म भी बन गई।"[४]

" रांगेय राघव लम्बे समय तक अविवाहित रहने के बाद ७ मई १९५६ को सुलोचना आयंगार से विवाह किया। " ८ फरवरी १९६० को पुत्री सीमान्तिनी का जन्म हुआ[५]। " " सन १९६१ में रांगेय राघव पर कैंसर का भीषण आक्रमण हुआ, कोई निदान नहीं हुआ[६]। " आखिर १२ सितम्बर १९६२ को उनकी मौत हुई। इस प्रकार रांगेय राघव के लेखन कार्य में अधिकांश जीवन,आगरा,वैर और जयपुर में व्यतीत किया। " आजीवन स्वतंत्र लेखन और कठिन संघर्षों को झेला[७]। " यही उनके जीवन की शोकान्तिका है।

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.२६।

२ वही पृ.२६।

३ वही पृ.२६।

४ सम्पा.अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) से उधृत।

५ वही

६ डॉ.कमलाकर गंगावणे," कथाकार रांगेय राघव", पृ.२६।

७ सम्पा.अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) से उधृत।

५) व्यक्तित्व के पहलू --

रांगेय राघव अद्भूत प्रतिभावान सर्वसामान्य लेखक थे। उनका व्यक्तित्व विविध पहलूओं से आकर्षक बन गया था।

(क) शरीर सौष्ठव --

रांगेय राघव का व्यक्तित्व मनमोहक एवं आकर्षक था। गौरवर्ण, उन्नत ललाट और सुगठित - सुकुमार शरीर। उनकी आँखे और अंगुलियाँ अदभूत थी। आँखे विशाल और आभा से दीप्त थी। उनमें मोहनी शक्ति बसी हुई थी, जो देखनेवाले को मंत्रमुग्ध करती थी। रांगेय राघव के व्यक्तित्व पर उनके मित्र डॉ.कुन्दलाल उप्रेति ने इस प्रकार शब्दबध्द किया है -- " लम्बाशरीर, साफ चेहरा, उन्नत और स्निग्ध ललाट, लम्बी एवं नुकीली नाक, नक्काशी की हुई मुख्याती भवें, सतेज विशाल नेत्र (जिनमें कभी-कभी शरारत भी बहक जाती थी।) पतले-पतले गुलाबी नाजुक ओठ और ठोढी। सरिता की गंभीर भँवरों को समेटते हुई। यह सब कुछ मिलकर ही तो इन्द्रधनुष्य बनता है और वह इन्द्रधनुष्य ही था। ऐसी सौम्य, शालीन मुखाकृति एक नवीन सृष्टि रही थी। पानी तमिलनाडू और ब्रजभूमि की छवि ने साकार होकर एक नवीन व्यक्तित्व की सृष्टि की हो।"[१] उनका यह सौष्ठव मृत्यु तक जैसे के वैसे ही रहा।

(ख) वेशभूषा -

रांगेय राघव की वेशभूषा सामान्य थी। " छात्र दशा में वे शर्ट और पतलून पहनते थे। बाद में वे कुर्ता और पाजामा या धोती पहनने लगे। पैरों में चप्पल रहती थी। जाडे के दिनों में वे शाल का उपयोग भी करते थे, कभी-कभी शेरवानी और अचकन पहनते थे, सिर पर टोपी और अधिक ठण्ड पडने पर गले में

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे, ' कथाकार रांगेय राघव ', पृ.२७।

मफलर लिया करते, थे, धोती के पटल का एक सिरा हाँथ में थामे पंद-पंद एक-सी चाल चलना उनको भाता था। उनकी इस चाल को और लोग ध्यान से देखते थे। पड़ोसी तक इसमें रूचि लेते थे।[1]" प्राय: वे दाढी-मूँछ साफ करते थे। यदि कोई सनक सवार हुई तो दाढी-मूँछ बढा लेते थे।

(ग) अभिरूचि --

रांगेय राघव प्रकृति का सौन्दर्य लेखन करने में बड़े कुशल थे। वे हमेशा प्रकृति में रूचि लेते और घुमते वक्त मित्रों को अपनी ओर आकृष्ट करते रहते। समाज में उन्हें मौलिक स्थान था। वे मित्रों के यहाँ अपना समय गँवाते थे।" आगरा में तीन रेस्तराँ ऐसे हैं जहाँ वे प्राय: जाया करते थे। उनके नाम हैं - दरोगा, नाथा, गोवर्धन। इनके अतिरिक्त उनका प्रिय रेस्तराँ बागमुजफ्फरखाँ मोहल्ले के बाबू नत्थीलाल का था। वह एकदम सामान्य रेस्तराँ था। उनका यह प्रिय रेस्तराँ सन १९४९ के आसपास बंद हो गया है। रांगेय राघव ने अपने लेखन के लिए रेस्तराओं से सामग्री प्राप्त की है। वे जहाँ भी जाते थे, वहीं उनका किसी एक सामान्य रेस्तराँ से लगाव हो जाता था।" [2]

रांगेय राघव धुम्रपान के आदि थे। उनका एक मात्र व्यसन था - सिगरेट पीना। वे लगातार सिगरेट पी लेते थे। कई बार वे एक साथ दो-दो सिगरेट जलाकर पी लेते थे। परिवार के सदस्यों की उपस्थिति में वे सिगरेट पी लेते थे। इसमें उनके पित्र भी सम्मिलित होते थे।" बाद में कैंसर से पीड़ित होने पर भी उनकी सिगरेट नहीं छुटी। डॉक्टर के मना करने पर भी वे चोरी-चोरी सिगरेट पी लेते थे। पत्नी तथा स्नेहियों के अनुरोध और आग्रह को उन्होंने सदैव टाला।" [3]

---

१ डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ. २७-२८।

२ वही पृ. २८।

३ वही पृ. २८।

" रांगेय राघव अपने साहित्य सेवी मित्र मण्डली के साथ प्रसंगोचित बौध्दिक व्यंग्य-विनोद करते थे। उनमें भी श्री राजनाथ शर्मा, डॉ.कुन्दलाल उप्रेति, डॉ.विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, डॉ.घनश्याम अस्थाना ,डॉ.रामविलास शर्मा, इनके व्यंग्य-विनोद के लक्ष्य बनते थे।" [१]

६) साहित्य लेखन - योजना -

रांगेय राघव ने प्रचुर मात्रा में साहित्य लेखन किया है। वे हमेशा अध्ययन करके उस आधार पर पहले योजना बनाते थे। बाद में वे साहित्य लिखते थे। "मानसिक थकान की स्थिति में वे मनोरंजनात्मक साहित्य का अध्ययन करते थे। मनोरंजनात्मक साहित्य में बाबू देवकीनंदन खत्री की " चन्द्रकान्ता संतति" विशेष रुप से पढते। वह उनका प्रिय ग्रंथ था। वे शौच के समय भी शौचालय में पत्र-पत्रिकाएँ पढ लेते थे। उन्होंने शौचालय को दैनिक वाचनालय का रूप दिया था। बिना पुस्तक के उनका कोई नित्यक्रम पूर्ण नहीं होता था।" [२]

इस प्रकार मृत्यु के साथ संघर्ष करते-करते" अन्त में ११ सितम्बर को सुबह उनकी हालत अत्यंत गंभीर हुई और सारे प्रयत्न के बावजूद बुधवार १२ सितम्बर, १९६२ को सायं ४ बजे उनका देहावसन हो गया[३]।" मृत्यु के समय इनकी आयु केवल ३९ वर्ष की थी।" मृत्यु के बाद बम्बई में ही क्वीन्स रोड स्थित चन्दनवाडी सोनापुर के स्मशान में उनका दाहसंस्कार किया।" [४]

---

१ डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.२९।

२ सम्पा.अशोक शास्त्री - रांगेय राघव की सम्पूर्ण कहानियाँ (पहला भाग) से उधृत।

३ डॉ.कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.३२।

४ वही पृ.३२।

साहित्यकार तथा उसकी कृतियों में परस्पर संबंध बना रहता है। साहित्यकार के व्यक्तित्व का प्रभाव उसके साहित्यपर पड़ता है। अत: राघव जी के व्यक्तित्व एवं उनके व्यक्तित्व- गठन में उनके परिवार का योगदान उनका जन्म, बचपन, शिक्षा एवं कृतित्व को इस अध्याय में देखा गया है। साथ ही आपके साहित्य सृजना का पाठकों से परिचय हो, इस दृष्टि से मैंने आपके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

(ब) रांगेय राघव का कृतित्व --

१) प्रास्तविक --

रांगेय राघव जी ने अपने जीवन की अल्पायु में विपुल साहित्य का सृजन किया है। उनकी रचनाओं में ज्ञान-विज्ञान की सपस्त शाखाओं को छुने का प्रयास रहा है। सृजनात्मक साहित्यकार के रूप में वे ख्याति प्राप्त रहे हैं। साहित्य की सभी विधाओं पर उन्होंने कुछ-न-कुछ लिखा है। साहित्येत्तर विषयों पर भी उनका लगाव था। इसी नाते उन्हें ज्ञान का उपासक भी कह सकते है।

रांगेय राघव जी ने स्वयं अपनी रचनाओं की सूची तैयार की थी। उक्त रचनाओं की सूची यथावत दी जा रही है। इन रचनाओं के अतिरिक्त अन्य प्रकाशित - अप्रकाशित तथा जिनका उल्लेख मात्र हुआ है। उन सब का परिचय क्रम से दिया जा रहा है।

(२) प्रेरक तत्व --

रांगेय राघव जी के साहित्यकार रूप का प्रेरक तत्व अपने परिवार के सदस्यों से रांगेय राघव जी ने कुछ-न-कुछ सीखा है। उनके पूर्वजों में से कोई-न-कोई सदस्य किसी-न-किसी कला में निष्णात रहा है। पारिवारिक सदस्यों की कलात्मक अभिरुचियों तथा उनके वंशगत संस्कारों का विवरण इसप्रकार है --

नाना - उनके नाना एक चित्रकार और एक कुशल वीणावादक भी थे।

पापा - उनके पापा कुशल मृदंगवादक थे।

माता - उनकी माता साहित्यिक अभिरुचि रखनेवाली महिला थी।

पिता - उनके पिता संस्कृत के साहित्यकार थे।"[१]

३) प्रथम रचना --

"रांगेय राघव जी के सृजनात्मक कार्य का आरंभ सन १९३७ के आसपास "१४ वर्षों की अवस्था में हुआ। छात्र-जीवन में ही उन्होंने लिखना आरंभ कर दिया था। उनकी प्रथम रचना -" जो एक गीत थी - साप्ताहिक विश्वमित्र" कलकत्ता से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका में छपी थी। इसी काल में उन्होंने पाश्चात्य साहित्य से प्रभावित होकर" बोलते खण्डहर" और सन १९३८ में" अंधेरे की भूल" नामक रचनाएँ लिखी। द्वितीय विश्वयुध्द एवं इस की क्रान्तिपर आधारित" अजेय खण्डहर " (काव्यसंग्रह) तथा" साम्राज्य का वैभव " (कहानी संग्रह) नामक दो संकलन प्रकाशित किए। इसी वर्ष" प्रगतिशील साहित्य के मानदण्ड" लिखी। " तूफानों के बीच " (रिपोर्ताज)" विषादमठ (उपन्यास)," हंस" में उनकी रचनाएँ छपी है। यहाँ से वे गद्य लेखक के रूप में ज्ञात हो गएँ। " हंस" में उनकी रचनाएँ छपी है। सन १९४८ में उनका प्रथम मौलिक उपन्यास " घरौंदे " प्रकाशित हुआ। घरौंदे से" आखिरी आवाज" तक वे लगातार लिखते रहें है।"[२]

४) रचनाओं की सूची --

रांगेय राघव जी ने अपनी रचनाओं की सूची स्वयं तैयार की है। यह सूची सुलोचना राघव द्वारा डॉ.कमलाकर गंगावणे जी को प्राप्त हुई है। डॉ.कमलाकर गंगावणे जी के" कथाकार: रांगेय राघव" इस शोधांक में जो सूचीक्रम दिया है, वही सूची दी जा रही है। वह इस प्रकार है --

---

१ सम्पा.अशोक शास्त्री -"ग्यारह कहानी संग्रह" शोधांक संकलन - डॉ. रांगेय राघव के कहानीसंग्रह के प्रथम भाग से उध्दृत।

२ डॉ. कमलाकर गंगावणे - कथाकार रांगेय राघव - पृ.३८ से ५५ तक।

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
	व्ही.पी.ए.	व्ही.पी.ए. का संकेत - विनोद पुस्तक मंदिर आगरा के लिए है।
१	विजयिनी	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा से छपी है।
२	इन्द्रधनुष्य	वही
३	संस्कृति और समाजशास्त्र भाग -१ गो भाग-२	यह पुस्तक श्री गोविंद शर्मा के सहयोग से लिखी गई है। मुल सूची में `गो` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
४	संस्कृति और मानवशास्त्र. गो	वही
५	अपराधशास्त्र, श्या:	यह पुस्तक श्री श्याम शर्मा के सहयोग से लिखी गई है। मुल सूची में `श्या` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
६	सामाजिक समस्याएँ और विघटन - श्या.	वही
७	सामाजिक समस्या और रीतिरिवाज - मु	यह पुस्तक श्री मुरारी प्रभाकर के सहयोग से लिखी गई है। मुल सूची में `मु` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
८	महाकाव्य विवेचन	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मंदिर से छपी है।
९	काव्य, यथार्थ और प्रगती	वही
१०	समीक्षा और आदर्श	वही
११	बन्दुक और बीन	वही
१२	बोने और पायलफूल	वही

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मुल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
१३	मेरी भव बाधा हरौ	यह पुस्तक विनोद पुस्तक मंदिर आगरा से छपी है।
१४	रत्ना की बात	वही
१५	लाई का ताना	वही
१६	लक्ष्मिा की आँखे	वही
१७	जब आवेगी काली घटा	वही
१८	धूनी का धूँआं	वही
१९	काव्य,कला और शास्त्र	वही
२०	देवकी का बेटा	वही
२१	यशोधरा जीत गई	वही
२२	भारती का सपूत (RPSD)	'RPSD' का संकेत राजपाल एण्ड सन्स,दिल्ली के लिए है।
२३	तूफान	टेमपेस्ट (शेक्सपियर)।
२४	एक सपना	अ मीड समर नाईट - ट्रीम शेक्सपियर।
२५	परिवर्तन	टेमिंग ऑफ दि श्रु शेक्सपियर।
२६	तिल का ताड	मच एडो अबाउट नथिंग शेक्सपियर।
२७	भूलभूलैया	दि कॉमेडी ऑफ इरार्स शेक्सपियर।
२८	निष्फल प्रेम	लव्हज लेबर्स लास्ट शेक्सपियर।
२९	बारहवीं रात	ट्वेल्थ नाईट शेक्सपियर।
३०	जैसा तुम चाहो	एज यू लाईक इट शेक्सपियर।
३१	वैनिस का सौदागर	मर्चेंट आप वेनिस-शेक्सपियर।
३२	रोमियों ज्यूलियट	रोमियों अण्ड जुलियट,शेक्सपियर।
३३	जूलियस सीजर	जूलियस सीजर-शेक्सपियर।

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई फुल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
३४	सम्राट लियर	किंग लियर - शेक्सपियर ।
३५	मैकबेथ	मैकबेथ शेक्सपियर ।
३६	हेम्लेट	हेम्लेट शेक्सपियर ।
३७	आथेलो	आथेलो शेक्सपियर ।
३८	मुद्राराक्षस	मुद्राराक्षस - विशाखदत्त ।
३९	मृच्छकटिक	मृच्छकटिक - शूद्रक ।
४०	मन के बन्धन	लायालिटिज - गाल्सवर्दी ।
४१	दशकुमारचरित	दशकुमारचरित दण्डी ।
४२	संसार के महान उपन्यास	इस पुस्तक में विश्व साहित्य के श्रेष्ठ उपन्यासों का संक्षिप्त कथासार दिया है ।
४३	नकली उपग्रह राकेट और बाहरी आकाश	स्पेस-वायती ले यह पुस्तक ज्ञान-विज्ञान माला के अन्तर्गत ` राकेट की कहानी` शीर्षक से छपी है ।
४४	मेरी प्रिय सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ	यह रचना उनके जीवन काल में नहीं छपी ।
४५	आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और शृंगार	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है ।
४६	आधुनिक हिन्दी कविता में विषाय और शैली	- वही -
४७	पाँच गधे	- वही -

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई पुल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
४८	बन्धन मुक्ता	इस रचना की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघवने प्रकाशनार्थ राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली के पास दी है।
४९	पक्षी और आकाश	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
५०	राह न रुकी	- वही -
५१	राई और पर्वत	- वही -
५२	पथ का पाप	- वही -
५३	छोटी-सी बात	- यह पुस्तक हिन्द पाकेट बुक्स प्रा.लि., दिल्ली से छपी है।
५०	धरती मेरा घर	यह पुस्तक राजपाल एण्ड सन्स से छपी है।
५५	कब तक पुकारूँ	- वही -
५६	प्रोफेसर	- वही -
५७	कल्पना	- वही -
५८	दायरे	- यह पुस्तक हिन्दी पाकेट बुक्स प्रा.लि., से छपी है।
५९	आग की प्यास`एपीबीडी`	- यह पुस्तक अशोक पाकेट बुक्स, दिल्ली से छपी है। पुल सूची में `एपीबीडी` का संकेत इसी संदर्भ में दिया गया है।
६०	हेारेस काव्यकला`डीयु`	इस पुस्तक की पाण्डुलिपि श्रीमती सुलोचना राघव के पास है। `डीयु` का अर्थ स्पष्ट नहीं है।

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई पुल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
६१	केपीजे काव्यकला	केपीजे जयपुर के किसी प्रकाशक का नाम है, जिसका ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है।
	एस.पी.	"एस.पी." का ठीक-ठीक विवरण प्राप्त नहीं हो सका है किन्तु यह ज्ञात है कि पुलासर "एस.पी." की प्रकाशन संस्थाएँ - सरस्वती प्रेमस, बनारस, सरस्वती प्रकाशन सदन आगरा, से इनकी कुछ रचनाएँ प्रकाशित हुई है।
६२	घरौन्दा	इसका प्रथम संस्करण सन १९४६ में सरस्वती प्रेस बनारस से छपा है। बाद में यह राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली से छपा है।
६३	तुलसीदास का कथाशिल्प	यह पुस्तक म.प्र.साहित्य प्रकाशन विलासपुर से सन १९५९ में प्रकाशित हुई।
६४	उबाल	यह पुस्तक राजपात एण्ड सन्स, दिल्ली से छपी है।
६५	विरूदक	यह पुस्तक साहित्य कार्यालय आगरा से छपी है।
६६	कालविजय	- वही -
६७	समुद्र के फेन	- वही -

क्रम	रांगेय राघव द्वारा रचनाओं की तैयार की गई मूल सूची	रचनाओं के सम्बन्ध में विवरण
६८	पराया	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली ।
६९	राह के दीपक	- वही -
७०	मेधावी	- वही -
७१	पांचाली	- वही -
७२	किरणें बुहारलो	- यह सचित्र काव्य संग्रह है । इसकी पाण्डुलिपि सुलोचना राघव जी के पास है ।
७३	युरोपीय कथाएँ	- वही -
७४	एशियाई कथाएँ	- वही -
७५	ईरानी कथाएँ	- वही -
७६	फारसी कथाएँ	- वही -
७७	फ्रेन्च कथाएँ	- वही -
७८	हेलेनिक कथाएँ	- वही -
७९	आयवन्ही	आयवन्ही - सर वाल्टर स्काट इस पुस्तक की पाण्डुलिपि सुलोचना राघव के पास है ।
८०	एण्टीगोने	एण्टीगोने - सोफोक्लिज ।

उपर्युक्त रचनाओंके साथ ही साथ रांगेय राघवजी ने अन्य, भी रचनाएँ की है । उन्होंने करीब करीब १५० रचनाएँ की है ।

५) प्रस्तुत लघु-प्रबन्ध से सम्बन्धित रचनाएँ --

रांगेय राघव जी ने साहित्य की सभी विधाओं पर कुशलता से प्रकाश डालने का सफल प्रयास किया है । यहाँ अधिक जानकारी के लिए उपन्यास,कहानी रचनाओं का क्रम प्रकाशन वर्षों के आधार पर किया है । इसमें कुछ रचनाएँ बहुत

पहले लिखी गई हो और कई वर्षों बाद छपी हो। लेकिन यहाँ प्रकाशन वर्षों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इनका विभाजन "उपन्यास" तथा "कहानी" के रूप में किया गया है।

अ) उपन्यास --

क्रम	उपन्यास का शीर्षक	प्रकाशन वर्ष
१.	धरौन्दे	सन १९४६
२.	विषादमठ	सन १९४५
३.	मुर्दों का टीला	सन १९४८
४.	सीधा सादा रास्ता	सन १९५१
५.	चीवर	सन १९५१
६.	हुजूर	सन १९५२
७.	काका	सन १९५३
८.	अँधेरे के जुगनू	सन १९५४
९.	उबाल	सन १९५४
१०.	देवकी का बेटा	सन १९५४
११.	यशोधरा जीत गई	सन १९५४
१२.	लोई का ताना	सन १९५४
१३.	रत्ना की बात	सन १९५४
१४.	भारती का सपूत	सन १९५४
१५.	बोलते खण्डहर	सन १९५५
१६.	अँधेरे की भूल	सन १९५५
१७.	प्रतिदान	सन १९५६
१८.	बौने और घायल फूल	सन १९५७
१९.	कब तक पुकारूँ	सन १९५७
२०.	लक्ष्मा की आँखें	सन १९५७
२१.	बँदूक और बीन	सन १९५८

क्रम	उपन्यास का शीर्षक	प्रकाशन
२२	राई और पर्वत	सन १९५८
२३	पक्षीऔर आकाश	सन १९५८
२४	राह न रुकी	सन १९५८
२५	जब आवेगी काली घटा	सन १९५८
२६	छोटी सी बात	सन १९५९
२७	धूनी का धुआँ	सन १९५९
२८	पथ का पाप	सन १९६०
२९	महायात्रा : अन्धेरा रास्ता	सन १९६०
३०	महायात्रा : रैन और चंदा	सन १९६०
३१	मेरी भव बाधा हरो	सन १९६०
३२	धरती मेरा घर	सन १९६१
३३	दायरे	सन १९६१
३४	आग की प्यास	सन १९६१
३५	कल्पना	सन १९६१
३६	आँधी की नावें	सन १९६१
३७	पतझार	सन १९६२
३८	प्रोफेसर	सन १९६२
३९	पराया	सन १९६२
४०	आखिरी आवाज	सन १९६२

ब) कहानी संग्रह --

१	साम्राज्य का वैभव	सन १९४७
२	समुद्र के फेन	सन १९४७
३	देवदासी	सन १९४७
४	जीवन के दाने	सन १९४९
५	अधूरी मूरत	सन १९४९

क्रम	कहानी संग्रह का शीर्षक	प्रकाशन
६	अंगारे न बुझे	सन १९५१
७	स्याश पुर्दे	सन १९५३
८	इन्सान पैदा हुआ	सन १९५७
९	पाँच गधे	सन १९६०
१०	एक छोड एक	सन १९६३
११	मेरी प्रिय कहानियाँ	सन १९७० (प्रथम सं.)

क) रांगेय राघव की अन्य रचनाएँ --

(१) सृजनात्मक साहित्य --

१ काव्य
२ नाटक
३ निबन्ध
४ रिपोर्ताज
५ आलोचना
६ शोधग्रन्थ
७ महान उपन्यास
८ प्राचीन विश्व कहानियाँ
९ अभिजात कृतियों का परिचय देनेवाली रचनाएँ।
१० अनुवाद।

(२) काव्य --

१ मेधावी
२ पिघलते पत्थर
३ किरणें बुहार की
४ अजेय खण्डहर
५ राह के दीपक

६ रूप की छाया

७ पंचशिखा

८ पांचाली

९ श्यामली

१० बंधन मुक्ता

११ काव्यकलश

१२ विजयिनी

१३ मिटते चिन्ह

१४ आर्या

१५ उत्तरायण

१६ यात्रा के फल

१७ मृत्युंजय ।

(३) नाटक --

१ इन्द्रधनुष्य (स्फांकी संग्रह)

२ स्वर्ग भूमि का यात्री

३ विदूषक

४ रामानुज

५ आखिरी धब्बा ।

(४) निबन्ध --

१ संगम और संघर्ष

२ कालविजय ।

(५) रिपोर्ताज --

१ तूफानों के बीच ।

(६) आलोचना --

१. आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और श्रृंगार ।

२. आधुनिक हिन्दी कविता में विषाय और शैली ।

३. काव्य ,कला और शास्त्र ।

४. काव्य : यथार्थ और शास्त्र ।

५. काव्य के मूल विवेच्य ।

६. समीक्षा और आदर्श ।

७. चन्द्रावली नाटिका ।

८. महाकाव्य विवेचन ।

९. भारतीय सन्त परम्परा और समाज ।

१०. भारतीय पुनर्जागरण की भूमिका ।

११. हिन्दी साहित्य की धार्मिक और सामाजिक पूर्वपीठिका ।

१२. तुलसीदास का कथाशिल्प ।

(७) शोध - प्रबन्ध --

१) गोरखनाथ (गोरखनाथ और उनका युग)

(८) महान उपन्यास --

१) संसार और महान उपन्यास ।

(९) प्राचीन विश्व कहानियाँ --

कुल मिलाकर १३ प्राचीन विश्वकहानियाँ रांगेय राघवजी ने लिखी है ।

(१०) अनुवाद --

उन्होंने संस्कृत के अभिजात कृतियों का तथा अंग्रेजी के अभिजात कृतियों का अनुवाद किया है । उन्होंने अन्य रचनाओं के भी अनुवाद किए है ।

(११) पुरस्कृत रचनाएँ --

१. मेधावी - हिन्दुस्तानी साहित्य अकादमी ।
२. प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास - डालमियाँ पुरस्कार।
३. कब तक पुकारूँ - उत्तर प्रदेश शासन ।
४. पक्षी और आकाश - उत्तर प्रदेश शासन ।
५. मेरी प्रिय कहानियाँ - राजस्थान साहित्य अकादमी ।

रांगेय राघवजी ने हिन्दी भाषा और साहित्य की वृध्दि की । उनकी सेवा को देखकर और प्रभावित होकर राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,वर्धा ने उन्हें १९६६ मरणोत्तर " महात्मा गांधी पुरस्कार से सम्मानित किया । उन्होंने कुल मिलाकर १५१ पुस्तके लिखी है । कहानी,उपन्यास,काव्य,नाटक,निबंध,रिपोर्ताज, आलोचना,समाजशास्त्र,इतिहास,विज्ञान पर अनुवाद आदि अनेक प्रकार की पुस्तके लिखी है ।

निष्कर्ष --

रांगेय राघवजी का व्यक्तित्व विविधमुखी रहा है। वे कुल से दाक्षिणात्य थे लेकिन दाई शतक से पूर्व उनके पूर्वज वैर (भरतपुर) के निवासी बने थे । उनका परिवार धार्मिक होने के कारण धर्म का प्रभाव उनपर पडा था । उनके माता-पिता सुसम्पन्न एवं सुसंस्कृत होने के कारण इनका प्रभाव रांगेय राघव पर पडा हुआ दिखाई देता है । उनकी शिक्षा आगरा में हुई । उन्होंने पीएच.डी. की उपाधि आगरा विश्वविद्यालय से प्राप्त की । साहित्य के अतिरिक्त चित्रकला,संगीत और इतिहास पुरातत्व में उन्हें रुचि थी । उनका व्यक्तित्व विभिन्न पहलूओं से भरा है ।

व्यक्तित्व का प्रभाव अनजाने ही साहित्यकार के रचनाओं पर पड जाता है उसीप्रकार रांगेय राघव के व्यक्तित्व का प्रभाव उनके कृतित्व पर दिखाई देता है । उनके साहित्य में विविधता दिखाई देती है । अन्त में हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि उनका साहित्य पाठकोंको सोचने के लिए विवश करता है ।